

# नेपालमा आदिवासी अधिकार

नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू

सम्पादन सल्लाहकार

शान्ति कुमारी राई दिनेश कुमार घले  
शंकर लिम्बू भिम राई  
अमृत योन्जन-तामाङ

सम्पादक  
टहल थामी  
गोबिन्द छन्त्याल

नेपालमा आदिवासी अधिकार

नीतिगत अवस्था,  
चुनौती र अवसरहरू

सम्पादक  
टहल थामी, गोबिन्द छन्त्याल



ISBN 9879937913539



9 879937 913539

# नेपालमा आदिवासी अधिकार

नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू

सम्पादन सल्लाहकार

शान्ति कुमारी राई

दिनेश कुमार घले

शंकर लिम्बू

भिम राई

अमृत योञ्जन-तामाङ

सम्पादक

टहल थामी

गोबिन्द छन्त्याल



नेपालमा आदिवासी अधिकारः

नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू

प्रकाशकः नेपालका आदिवासीहरूको मानव अधिकार सम्बन्धी

वकिल समूह (लाहूर्निप)

अनामनगर, काठमाडौं ।

पो.ब.नं.: १११७९

फोन: +९७७ ०१ ४२६६५१०

इमेल: [lahurnip.nepal@gmail.com](mailto:lahurnip.nepal@gmail.com)

वेबसाइट: [www.lahurnip.org](http://www.lahurnip.org)

© LAHURNIP, 2017

लेआउट: खापुङ, क्रियसन

अनामनगर, काठमाडौं ।

ISBN: 978-9937-9135-3-9

---

Indigenous Peoples Rights in Nepal: Policy Status,  
Challenges and Opportunities

Editorial Advisors: Shanti Kumari Rai, Dinesh Kumar Ghale,  
Shankar Limbu, Bhim Rai, and Amrit Yonjan-Tamang.

Edited by Tahal Thami/Gobinda Chhantyal

## संक्षेपीकरण

|           |   |
|-----------|---|
| आईएलओ     | अन्तर्राष्ट्रिय श्रम संगठन                            |
| आजउराप्र  | आदिवासी जनजाति उत्थान राष्ट्रिय प्रतिष्ठान            |
| आ.व.      | आर्थिक वर्ष   |
| ऐऐ        | ऐजन ऐजन   |
| गाविस     | गाउँ विकास समिति                                      |
| जिविस     | जिल्ला विकास समिति                                    |
| नपा       | नगरपालिका   |
| नि.नं.    | निर्णय नम्बर  |
| नेकपा     | नेपाल कम्युनिष्ट पार्टी                               |
| ने.का.प.  | नेपाल कानून पत्रिका                                   |
| नं.       | नम्बर   |
| पृ.       | पृष्ठ   |
| वि.       | विरुद्ध   |
| यूएनडीप   | आदिवासी अधिकारसम्बन्धि संयुक्त राष्ट्रसंघीय घोषणापत्र |
| रा.शि.आ.  | राष्ट्रिय शिक्षा आयोग                                 |
| लाहुरिप   | नेपालका आदिवासीहरूको मानव अधिकार सम्बन्धी वकिल समूह   |
| वि.सं.    | विक्रम संवत्  |
| सी.बी.आर. | समुदायमा आधारित पुनर्स्थापना                          |
| सं.       | सम्पादक   |

## Abbreviation

|                  |   |
|------------------|---|
| AD               | Anno Domini   |
| ADB              | Asian Development Bank  |
| AGRBS<br>Sharing | Access to Genetic Resources and Benefit                                       |
| AIPP             | Asia Indigenous Peoples Pact  |
| CA               | Constituent Assembly  |
| CBD              | Convention on Biological Diversity  |
| CBR              | Community Based Rehabilitation  |
| CBS              | Central Bureau of Statistics  |
| CEDAW            | Convention on the Elimination of all Forms<br>of Discrimination against Women |
| CERD             | Convention on the Elimination of All Forms<br>of Racial Discrimination        |
| COP              | Conference of the Parties   |
| CPN              | Communist Party of Nepal  |
| CRC              | Convention on the Rights of the Child   |
| CSR              | Corporate Social Responsibility   |
| CSRDSP           | Committee for State Restructuring and<br>Division of State Power              |

|          |  |
|----------|--|
| DDC      | District Development Committee                                       |
| DFID     | Department for International Development                             |
| EA       | Electricity Act  |
| EIA      | Environment Impact Assessment  |
| FPIC     | Free, Prior and Informed consent                                     |
| GI       | Governance Index   |
| GL       | Generation License   |
| GoN      | Government of Nepal  |
| GSI      | Gender and Social Inclusion  |
| HDI      | Human Development Index  |
| HLSRRC   | High Level State Restructuring Committee                             |
| ICCPR    | International Covenant on Civil and Political Rights                 |
| ICESCR   | International Covenant on Economic, Social and Cultural Rights       |
| ICIMOD   | International Centre for Integrated Mountain Development             |
| IEE      | Initial Environmental Examination                                    |
| IFAD     | International Fund for Agricultural Development                      |
| IFC      | International Finance Corporation                                    |
| ILO      | International Labour Organisation                                    |
| INC      | Indigenous and Nationalities Commission                              |
| IPPs     | Independent Power Producers  |
| IPs      | Indigenous Peoples   |
| IWGIA    | International Work Group for Indigenous Affairs                      |
| LAHURNIP | Lawyers' Association for Human Rights of Nepalese Indigenous Peoples |
| LGBTI    | Lesbian, Gay, Bisexual, Transgender & Intersex                       |
| LTR      | Lands, Territories and Resources                                     |
| MAT      | Mutually Agreed Terms  |
| MoAD     | Ministry of Agricultural Development                                 |
| MoFSC    | Ministry of Forest and Soil Conservation                             |
| MoFSC    | Ministry of Forests and Soil Conservation                            |
| MoLJPA   | Ministry of Law, Justice & Parliamentary Affairs                     |

|               |   |
|---------------|---|
| MoPE          | Ministry of Population and Environment                          |
| MW            | Mega Watt   |
| NBSAP         | National Biodiversity Strategy and Action Plan                  |
| NC            | Nepali Congress   |
| NEFIN         | Nepal Federation of Indigenous Nationalities                    |
| NESAC         | Nepal South Asia Centre   |
| NFDIN         | National Foundation for Development of Indigenous Nationalities |
| NPC           | National Planning Commission                                    |
| NTFPs         | Non-Timber Forest Products                                      |
| PES           | Payment for Ecosystem Services                                  |
| PI            | Poverty Index   |
| SL            | Survey License  |
| SOM/P         | Standard Operating Manual/Procedures                            |
| SRHLRC        | State Restructuring High Level Recommendation Commission        |
| UCPN (Maoist) | Unified Communist Party of Nepal (Maoist)                       |
| UML           | Unified Marxist Leninist  |
| UN            | United Nations  |
| UNCED         | United Nations Conference on Environment and Development        |
| UNDP          | United Nations Development Programme                            |
| UNDRIP        | United Nations Declaration on the Rights of Indigenous Peoples  |
| UNPFII        | United Nations Permanent Forum on Indigenous Affairs            |
| VDC           | Village Development Committee                                   |
| WB            | World Bank  |
| WRA           | Water Resource Act  |
| WSSD          | World Summit on Sustainable Development                         |

## प्रकाशकीय

संविधानसभामार्फत संविधान निर्माणलाई लोकतन्त्रको उत्कृष्ट नमूना मानिन्छ। इतिहासमा यस्ता अवसर विरलै आउँछ। नेपालको सन्दर्भमा पनि नेपाली जनताको लामो संघर्षपछि यो अवसर जुरेको हो। तर जसरी संविधानसभाले आम जनता तथा समुदायहरूको अधिकारका आवाजहरूको सम्बोधन गर्नुपर्थ्यो, त्यो हुन सकेन। संविधानसभाबाट बनेको संविधानमासमेत आदिवासीलगायतका समुदायहरूको अधिकार सुनिश्चित हुन नसक्दा असन्तुष्टिहरू भन्न बढेका छन्। त्यसको समाधान बेलैमा निकाल्न नसके देश भयंकर दुर्घटनामा पर्न सक्छ। त्यसरी संवैधानिक अधिकारबाट वन्चित एक समूह हो आदिवासी। ती समूहहरूको अधिकारका सम्बन्धमा संविधानमा भएका व्यवस्था र उनीहरूले चाहेको अधिकारका सम्बन्धमा गत पुष २२-२३, २०७३ (6-7 Januray 2017)मा काठमाडौंमा बृहत् सम्मेलनमा छलफल भएको थियो। सो कार्यक्रमको आयोजना गर्न पाउँदा लाहुर्निप गर्व महशूस गर्दछ।

सो कार्यक्रम आयोजनामा विभिन्न व्यक्ति, व्यक्तित्व तथा संघसंस्थाहरूको अमूल्य सहयोग लाहुर्निपलाई मिलेको थियो। यसरी सहयोग तथा सल्लाह सुभाक्क दिनुहुने डा. कृष्ण भट्टचन र डा. नवीन राईप्रति हामी आभारी छौं। त्यसैगरी United Nations Permanent Forum on Indigenous Issues (UNPFII) का उपाध्यक्ष Mr. Raja Devasish Roy, सोही निकायकी सचिवालयबाट पाल्नु भएकी Ms. Julia Raavad, र International Work Group for Indigenous Affairs (IWGIA) बाट कार्यक्रममा सहभागी बन्न आउनु भएका Mr. Christian Erniप्रति लाहुर्निप आभारी छ। त्यस्तै कार्यक्रमलाई सफल पारिदिन सहयोग गर्नुहुने अमृत योन्जन तामाङ, यशोकान्ती भट्टचन, डम्बर लोहोरुङ, डम्बर तेम्बे र नारायण निडलेखुप्रति पनि धन्यवाद व्यक्त गरिन्छ।



सो कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न गर्नका लागि महत्वपूर्ण सहयोगका United Nations Permanent Forum on Indigenous Issues (UNPFII), International Work Group for Indigenous Affairs (IWGIA), International Fund for Agricultural Development (IFAD), United Nations Development Programme (UNDP) लाई पनि धन्यवाद टक्रयाइन्छ । साथै कार्यक्रममा उपस्थित भई कार्यक्रमको शोभा बढाई दिनु भएकोमा राष्ट्रिय मानवअधिकार आयोगका अध्यक्ष माननीय अनुपराज शर्मा, आदिवासी जनजाति उत्थान राष्ट्रिय प्रतिष्ठानका उपाध्यक्ष चन्द्रबहादुर गुरुङ र सदस्यसचिव गोविन्द माझीप्रति लाहुर्निप कृतज्ञ छ । त्यसै गरी नेपाल आदिवासी जनजाति महासंघ, राष्ट्रिय आदिवासी जनजाति महिला महसंघलाई पनि धन्यवाद साथै सो कार्यक्रममा गरिमाय उपस्थितिका लागि माननीय सांसदहरू, विभिन्न संघसंस्थाका प्रतिनिधिहरू, बुद्धिजीविहरू, राजनीतिक दलका प्रतिनिधिहरू, विभिन्न राजदूतावासका प्रतिनिधिहरू, व्यापारिक क्षेत्रका प्रतिनिधिहरू, सरकारी निकायका प्रतिनिधिहरू, संयुक्त राष्ट्रसंघलगायत अन्तर्राष्ट्रिय निकायका प्रतिनिधिहरू र सामाजिक अभियन्ताहरूप्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापन गरिन्छ ।

यस पुस्तकमा सो कार्यक्रममा प्रस्तुत कार्यपत्रहरू समावेश गरिएका छन् । कार्यक्रममा कार्यपत्र प्रस्तुत गरिदिनुहुने विभिन्न मन्त्रालयका प्रतिनिधि-कर्मचारीहरू तथा बुद्धिजीविहरूप्रति पनि लाहुर्निप आभारी छ । साथै यस पुस्तक प्रकाशनमा प्रत्यक्ष तथा परोक्ष रूपमा योगदान गर्ने सबैप्रति हामी आभार व्यक्त गर्दछौं ।

शान्ति कुमारी राई  
अध्यक्ष

## विषय सूची/Content

संक्षेपीकरण/Abbreviation

प्रकाशकीय

### लैंगिक समानता, संस्कृति र भाषा

नेपालमा महिलाको अवस्था र सुधारका प्रयासहरू

नारायण बहादुर कुँवर ३

आदिवासी जनजाति महिला र बालबालिकाका सन्दर्भमा

नेपाल सरकारको नीति र अन्तर्राष्ट्रिय प्रावधानहरू

कैलाश राई २९

नेपालमा मातृभाषाको उपयोग: नीतिगत

र कार्यगत अवस्था

डा.डिल्लीराम रिमाल ५३

मातृभाषा, मातृभाषामा शिक्षा

र संस्कृतिसम्बन्धि राज्यको नीति

अमृत योन्जन-तामाङ १०५

# संविधान, कानून र नयाँ बन्ने कानूनहरूमा सामुहिक र आदिवासीको अधिकार

Legal framework on the rights of  
indigenous peoples in Nepal:  
Analysis of the gaps and the way forward  
Toyanath Adhikari 161

आदिवासी जनजाति मानवअधिकारसँग सम्बन्धित  
नीतिगत व्यवस्था र क्रियाकलापहरूको विश्लेषण  
सरिता ज्ञवाली १८१

प्रचलित कानूनमा आदिवासी जनजाति सम्बन्धी व्यवस्था  
शंकर लिम्बू १९९

## भूमि अधिकार, संरक्षित क्षेत्रहरू र जलवायु परिवर्तन

भूमिसुधार र व्यवस्थापनको क्षेत्रमा भएका  
नीतिगत व्यवस्थाहरूको विश्लेषण  
लीलानाथ दाहाल २१९

नेपालका अदिवासी जनजातिको भूमि र भूमि अधिकार  
नन्द कन्दङ्वा २५७

Policy Analysis on Indigenous Peoples

and Forest Resources in Nepal  
Dhananjaya Lamichhane 289

Ensuring Indigenous Peoples' Rights in Policies  
on Forest, Water and other Natural Resources:  
Issues, Challenges and Way  
Dr. Krishna B. Bhattachan 309

**व्यापार र मानवअधिकार, अग्रीम  
जानकारीसहितको मन्जुरीको अधिकार,  
संघीयता र राज्य पुनर्संरचना**

आदिवासी/जनजाति अधिकार संरक्षण तथा  
विकासका लागि गरिएका प्रयास, समस्या र सुझावहरू  
लीला अधिकारी ३४७

State Restructuring and Federalism in Nepal  
Krishna Hachhethu ३६७

Policies related to the Electricity  
Development in Nepal  
Sagar Raj Goutam 383

Community Engagement in  
Hydropower Development: Issue and Challenges  
Padmendra Shrestha 395

अनुसूचीहरू/Annexes ४१५

लैंगिक समानता, संस्कृति र भाषा



# नेपालमा महिलाको अवस्था र सुधारका प्रयासहरू

नारायणबहादुर कुँवर

पृष्ठभूमि

वर्तमान नेपाली समाजमा सामाजिक, आर्थिक, साँस्कृतिक, भाषिक, धार्मिक, जातीय, लैंगिक, शारीरिक र भौगोलिक आधारमा विभेद र असमानता कायम छन्। समाजमा व्याप्त विभेदहरूले समाजमा विभिन्न किसिमका द्वन्द्व, हिंसा, अशान्ति, उपद्रव र आतंकहरूको सिर्जना गर्ने गर्दछन्। मानवअधिकारको विश्वव्यापी अवधारणाले समाजमा रहेका सबै प्रकारका विभेदको अन्त्य हुनुपर्छ भन्ने मान्यता राख्दछ। नेपालका आदिवासी जनजाति, मधेशी, दलित र महिला राज्यसंयन्त्रबाट बहिष्कृत, उपेक्षित एवं सीमान्तकृत बनेका छन्। यी समुदायको समावेशीकरण, सहभागिता र सशक्तीकरण बिना सम्पूर्णतामा समृद्ध राष्ट्र निर्माण हुन

सकदैन । राज्यसंयन्त्रको सबै संरचना, क्षेत्र र प्रक्रियाहरूमा उपेक्षित समुदाय, भौगोलिक क्षेत्र र लिंगको समावेशीकरण गरि विकास निर्माणमा हातेमालो गर्न सके मात्र समृद्ध, शान्त र न्यायपूर्ण नेपाल बनाउन सकिन्छ ।

समावेशी शासन व्यवस्था नै द्रुततर र गुणात्मक विकास प्राप्त गर्ने महत्वपूर्ण आधार भएको विषयले अन्तर्राष्ट्रिय मान्यता पाएको छ । मानवअधिकार सम्बन्धी विश्वव्यापी घोषणापत्रले भेदभावको अग्राह्यताको सिद्धान्तलाई पुष्टी पनि गरेको छ । सबै मानिसहरू स्वतन्त्र जन्मन्छन् । प्रतिष्ठा र अधिकारमा समान हुन्छन् । साथै प्रत्येक व्यक्तिलाई मानवअधिकारको घोषणापत्रमा उल्लिखित सम्पूर्ण अधिकार तथा स्वतन्त्रता लिंगमा आधारित भेदभावलगायत कुनै पनि किसिमको भेदभाव बिना उपभोग तथा अधिकार आत्मसात् गर्ने अधिकार छ ।

हाम्रो समाजमा कायम धार्मिक, परम्परागत एवं संस्कृतिगत कारणबाट सिर्जित पितृसत्तात्मक सोँच, प्रचलन, व्यवहारका कारण महिलाको राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक र कानुनी सशक्तीकरणका प्रयासहरूको अवस्था सन्तोषजनक बन्न सकेको छैन । कुनै पनि राष्ट्रको पूर्ण र सर्वाङ्गीण विकास र शान्तिका लागि पुरुषसह सबै क्षेत्रमा महिलाको अधिकतम् सहभागिता हुन आवश्यक छ । परिवारको कल्याण र समाज विकासमा महिलाको योगदानलाई कदर गर्न त्यत्तिकै आवश्यक छ । महिला र पुरुषबीच पूर्णसमानता प्राप्त गर्न समाज र परिवारमा हुने महिलाको परम्परागत भूमिकामा परिवर्तन हुनुपर्दछ ।

यस लेखमा नेपालमा महिलाको विद्यमान अवस्था, उत्थानका प्रयासहरू, समस्या, समाधान र सम्भावनाहरूबारे प्रकाश पार्ने जमर्को गरिएको छ ।

### **महिला तथा बालअधिकार सम्बन्धी संवैधानिक व्यवस्था**

राज्यका नीतिहरू वाध्यात्मक कानुनी औजार नभए पनि राज्यलाई



नैतिक दबावदिने प्रभावकारी औजार भएको हुँदा मनोवैज्ञानिक रूपमा प्रभावकारी मानिन्छन् । नेपालको संविधानले समाजमा विद्यमान धर्म, प्रथा, परम्परा, रीति तथा संस्कारका नाममा हुने सबै प्रकारको विभेद, असमानता, शोषण र अन्यायको अन्त गर्ने<sup>1</sup> र देशको साँस्कृतिक विविधता कायम राख्दै समानता एवं सहअस्तित्वका आधारमा विभिन्न जातजाति र समुदायको भाषा, लिपि, संस्कृति, साहित्य, कला, चलचित्र र सम्पदाको संरक्षण र विकास गर्ने<sup>2</sup> नीति अँगालेको पाइन्छ ।

महिला अधिकार सम्बन्धी व्यवस्था: उल्लिखित समस्याहरू सम्बोधन गर्न वर्तमान नेपालको संविधानको धारा ३८को महिलाको हकको अन्तर्गत महिलालाई लैंगिक भेदभाव बिना समान वंशीय हक<sup>3</sup> हुने व्यवस्था गरेको छ । यसले गर्दा महिलालाई पैतृक सम्पत्तिमा समान हक हुने व्यवस्था सुनिश्चित हुन्छ । त्यस्तै, प्रत्येक महिलालाई सुरक्षित मातृत्व र प्रजनन स्वास्थ्य सम्बन्धी हक<sup>4</sup>को व्यवस्था संविधानमा गरिएको छ । महिला विरुद्ध धार्मिक, सामाजिक, साँस्कृतिक परम्परा, प्रचलन वा अन्य कुनै आधारमा शारीरिक, मानसिक, यौनजन्य, मनोवैज्ञानिक वा अन्य कुनै किसिमको हिंसाजन्य कार्य वा शोषण नगरिने र त्यस्तो कार्य कानुन बमोजिम दण्डनीय हुने र पीडितलाई कानुन बमोजिम क्षतिपूर्ति पाउने हक<sup>5</sup> संविधानले सुनिश्चित गरेको छ । राज्य संयन्त्रहरूमा महिलाको सहभागिताका लागि राज्यका सबै निकायमा महिलालाई समानुपातिक समावेशी सिद्धान्तका आधारमा सहभागी हुने<sup>6</sup>, महिलालाई शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगारी र सामाजिक सुरक्षामा सकरात्मक विभेदका आधारमा

1 ऐंऐ, धारा ५१ (ग) (५) ।

2 ऐंऐ, धारा ५१(ग) (६) ।

3 नेपालको संविधान, २०७२, धारा ३८(१) ।

4 ऐं ऐ, धारा ३८(२) ।

5 ऐं ऐ, धारा ३८(३) ।

6 ऐंऐ, धारा ३८ (४) ।

विशेष अवसर प्राप्त गर्ने<sup>7</sup> र सम्पत्ति र पारिवारिक मामिलामा दम्पतिको समान हक<sup>8</sup> प्रत्याभूत संविधानले गरेको छ ।

संविधानको सामाजिक न्याय र समावेशीकरण सम्बन्धी नीति अन्तर्गत असहाय अवस्थामा रहेका एकलमहिलालाई शीप, क्षमता र योग्यताका आधारमा रोजगारीमा प्राथमिकता दिँदै जीविकोपार्जनका लागि समुचित व्यवस्था गर्दै जाने<sup>9</sup>, जोखिममा परेका, सामाजिक र पारिवारिक वहिष्करणमा परेका तथा हिंसा पीडित महिलालाई पुनर्स्थापना, संरक्षण, सशक्तीकरण गर्न स्वावलम्बी बनाउने<sup>10</sup> र प्रजनन अवस्थामा आवश्यक सेवा सुविधा उपभोगको सुनिश्चितता गर्ने<sup>11</sup> प्रावधानहरू समावेश छन् ।

संविधानमा संघीय व्यवस्थापिका गठन गर्दा समानुपातिक निर्वाचन प्रणाली अनुसार निर्वाचित हुने ११०जना<sup>12</sup> प्रतिनिधिसभा सदस्यमा राजनीतिक दलले उम्मेदवारी दिँदा जनसंख्याको आधारमा महिला, दलित, आदिवासी जनजाति, खस आर्य, मधेशी, थारु, मुस्लिम, पिछडिएको क्षेत्रसमेतबाट बन्दसूचीका आधारमा प्रतिनिधित्व गराउने व्यवस्था संघीय कानून बमोजिम हुनेछ<sup>13</sup> भनि उल्लेख भएका कारण राज्यले राज्यसंचालनको माथिल्लो संरचनामा सबै क्षेत्र, वर्ग, जातजाति र लिंगको प्रतिनिधित्व होस् भन्ने मनशाय राखेको पाइन्छ । संघीय संसदमा प्रतिनिधित्व गर्ने प्रत्येक राजनितिक दलबाट निर्वाचित कूल सदस्य संख्याको कम्तिमा एकतिहाई सदस्य महिला हुनु पर्ने<sup>14</sup> व्यवस्था

---

7 ऐं, धारा ३८(५) ।

8 ऐं, धारा ३८(६) ।

9 ऐं, धारा ५१ (ब) (१) ।

10 ऐं, धारा (५१) (ब) (२) ।

11 ऐं, धारा (५१) (ब) (३) ।

12 ऐं, धारा (८४) (१) (ख) ।

13 ऐं, धारा(८४) (२) ।

14 ऐं, धारा (८४) (८) ।

## ७ ● नारायणबहादुर कुँवर

भएकाले राज्य संचालनको सर्वोच्च निकाय संघीय संसदमा उल्लेख्य मात्रामा महिलाको प्रतिनिधित्व सुनिश्चित गरेको पाइन्छ ।

यसै गरी प्रदेशसभाको गठन गर्दा पनि सामानुपातिक निर्वाचन प्रणालीअनुसार निर्वाचित हुने ४०प्रतिशत सदस्यमा राजनितिक दलले उम्मेदवारी दिँदा जनसंख्याको आधारमा महिला, दलित, आदिवासी जनजाति, खस आर्य, मधेशी, थारु, मुस्लिम, पिछडिएको क्षेत्र, अल्पसंख्यक समुदायसमेतबाट बन्दसूचीका आधारमा प्रतिनिधित्व गराउने व्यवस्था संघीय कानून बमोजिम हुनेछ<sup>15</sup> भनि संविधानमा उल्लेख छ । प्रदेशसभामा प्रतिनिधित्व गर्ने प्रत्येक राजनितिक दलबाट निर्वाचित कूल सदस्य संख्याको कम्तिमा एकतिहाई सदस्य महिला हुनुपर्ने<sup>16</sup> व्यवस्था भएकाले राज्यसंचालनका सबै तहमा महिलाको प्रतिनिधित्व सुनिश्चित भएको पाइन्छ ।

राज्यको स्थानीय तहमा महिला, दलित र अल्पसंख्यक समुदायको प्रतिनिधित्व गराई स्थानीय योजना छनोट, तर्जुमा र कार्यान्वयनमा सहभागिता गराउने उद्देश्यले गाउँसभा गठन गर्दा प्रत्येक वडाबाट वडाअध्यक्षसमेत गरी निर्वाचित हुने पाँचजना सदस्यमा दुइजना महिला हुनुपर्ने र गाउँसभामा दलित र अल्पसंख्यक समुदायहरूका प्रतिनिधित्व गराउन गाउँसभाले दलित वा अल्पसंख्यक समुदायबाट दुइजना निर्वाचन गर्ने व्यवस्था संविधानमा छ ।<sup>17</sup> नगरसभामा पनि नगरसभा गठन गर्दा प्रत्येक वडाबाट वडाअध्यक्षसमेत गरी निर्वाचित हुने पाँचजना सदस्यमा दुइजना महिला हुनुपर्ने व्यवस्था गरेको पाइन्छ । नगरसभामा दलित र अल्पसंख्यक समुदायहरूको प्रतिनिधित्व गराउन नगरसभाले दलित वा अल्पसंख्यक समुदायबाट दुइजना निर्वाचन गर्ने

---

15 ऐं, धारा १७६ (६) ।

16 ऐं, धारा (१७६) (९) ।

17 ऐं, धारा (२२२) (२) (३) ।

व्यवस्था छ।<sup>18</sup>

स्थानीयतहको कार्यकारिणी अधिकार प्रयोग गर्ने गाउँकार्यपालिकामा महिला, दलित र अल्पसंख्यक समुदायका प्रतिनिधिहरूको प्रतिनिधित्व सुनिश्चित गरेको पाइन्छ। गाउँसभाका सदस्यहरूले आफूमध्येबाट निर्वाचित गरेका चारजना महिला सदस्य र दलित वा अल्पसंख्यक समुदायबाट दुईजना निर्वाचन गरी गाउँकार्यपालिका गठन गर्ने<sup>19</sup> प्रावधान छ। त्यस्तै नगरकार्यपालिकामा पनि महिला, दलित र अल्पसंख्यक समुदायका प्रतिनिधिहरूको प्रतिनिधित्व सुनिश्चित गरेको पाइन्छ।<sup>20</sup> नगरकार्यपालिकामा नगरसभाका सदस्यहरूले आफूमध्येबाट निर्वाचित गरेका पाँचजना महिला सदस्य र दलित वा अल्पसंख्यक समुदायबाट तीनजना निर्वाचन गरी नगरकार्यपालिका गठन हुने प्रावधान रहेको देखिन्छ।<sup>21</sup>

राजनीतिक दलको विभिन्न तहका कार्यकारिणी समितिमा नेपालको विविधतालाई प्रतिबिम्बित गर्ने गरी समावेशी प्रतिनिधित्वको व्यवस्था हुनुपर्ने<sup>22</sup> प्रावधान रहेको छ। कुनै एउटै राजनीतिक दल वा एकै किसिमको राजनीतिक विचारधारा, दर्शन वा कार्यक्रम भएका व्यक्तिहरूले मात्र निर्वाचन, देशको राजनीतिक प्रणाली वा राज्य व्यवस्था संचालनमा भाग लिन पाउने वा सम्मिलित हुन पाउने गरी बनाइएको कानून वा गरिएको कुनै व्यवस्था वा निर्णय संविधानको प्रतिकूल हुने र स्वतः अमान्य हुने<sup>23</sup> संवैधानिक व्यवस्था रहेका कारण संविधानले समावेशी लोकतन्त्रलाई अंगिकार गरेको प्रष्ट हुन्छ।

---

18 ऐं, धारा २२३(२) (३)।

19 ऐं, धारा (१५) (४)।

20 ऐं, धारा २१६।

21 ऐं, धारा (२१६) (४)।

22 ऐं धारा २६९(४) (ग)।

23 ऐं धारा २७०(२)।

## ९ ● नारायणबहादुर कुँवर

संविधानले राष्ट्रपति र उपराष्ट्रपति फरक-फरक लिंग वा समुदायको हुने प्रावधान राखेर समावेशितालाई अभ्र जोड दिएको छ ।<sup>24</sup> त्यस्तै प्रतिनिधिसभाको सभामुख र उपसभामुखमध्ये एकजना महिला हुनुपर्ने<sup>25</sup> र राष्ट्रियसभाको अध्यक्ष र उपाध्यक्षमध्ये एकजना महिला हुनुपर्ने<sup>26</sup> व्यवस्था गरि राज्य संयन्त्रको उपल्लो नेतृत्व तहमा महिलाको नेतृत्व प्रत्याभूत गरेको देखिन्छ ।

बालबालिका सम्बन्धी व्यवस्था: संविधानको बालबालिकाको हकको व्यवस्था अन्तर्गत प्रत्येक बालबालिकालाई आफ्नो पहिचानसहित नामको हक हुने<sup>27</sup> र पालन पोषण, आधारभूत स्वास्थ्य र सामाजिक सुरक्षाको हक हुने<sup>28</sup> व्यवस्था छ । त्यस्तै प्रत्येक बालबालिकालाई शारीरिक, मानसिक वा अन्य कुनै किसिमको शोषण विरुद्धको हक हुने र कुनै पनि बालबालिकालाई कलकारखाना, खानी वा यस्तै अन्य जोखिमपूर्ण काममा लगाउन वा सेना, प्रहरी वा द्वन्द्वमा प्रयोग गर्न नपाइने प्रावधान छ ।<sup>29</sup> यसैगरी असाहय, अनाथ, सुस्त मनस्थिति, द्वन्द्वपीडित, विस्थापित एवं जोखिममा परेका सडक बालबालिकाको सुनिश्चित भविष्यका लागि राज्यबाट विशेष संरक्षण र सुविधा पाउने हक<sup>30</sup> पनि सुनिश्चित गरेको पाइन्छ ।

राष्ट्रिय महिला आयोग: संविधानले राष्ट्रिय महिला आयोगलाई संवैधानिक निकायको रूपमा स्थापित गरेको छ ।<sup>31</sup> महिलाका हक र

---

24 ऐंऐ धारा ७० ।

25 ऐंऐ, धारा ९१(२) ।

26 ऐंऐ, धारा ९२(२) ।

27 ऐंऐ, धारा ३९ (१) ।

28 ऐंऐ, धारा ३९ (२) ।

29 ऐंऐ, धारा ३९(६) ।

30 ऐंऐ, धारा ३९(८) ।

31 ऐंऐ धारा २५२ ।

हितसँग सम्बन्धित विषयमा नीति तथा कार्यक्रमहरूको तर्जुमा गरि कार्यान्वयनका लागि नेपाल सरकारसमक्ष सिफारिश गर्ने<sup>32</sup> मुख्य कार्य भूमिकामा स्थापित यस आयोगलाई महिलाको हक र हितसँग सम्बन्धित कानून वा नेपाल पक्ष भएको अन्तर्राष्ट्रिय सन्धि वा सम्झौता अन्तर्गतको दायित्व कार्यान्वयन भए वा नभएको विषयमा अनुगमन गरी त्यसको प्रभावकारी पालन वा कार्यान्वयनको उपायसहित नेपाल सरकारलाई सुझाव दिने<sup>33</sup> कार्य तोकिएको छ। त्यस्तै महिलालाई राष्ट्रिय विकासको मूलप्रवाहमा समाहित गर्न तथा राज्यका सबै निकायमा समानुपातिक सहभागिता सुनिश्चित गर्न मौजुदा नीति तथा कार्यक्रमको समिक्षा, अनुगमन तथा मूल्यांकन गर्ने र त्यसको प्रभावकारी कार्यान्वयनका लागि सिफारिश गर्ने<sup>34</sup>, लैंगिक समानता, महिला सशक्तीकरण तथा महिलासँग सम्बन्धित कानुनी व्यवस्थाको अध्ययन, अनुसन्धान गरी त्यस्ता कानूनमा गर्नुपर्ने सुधारका सम्बन्धमा सम्बन्धित निकायलाई सिफारिश गर्ने र सोको अनुगमन गर्ने<sup>35</sup> कर्तव्य पनि आयोगको रहेको छ। साथै महिला अधिकारसँग सम्बन्धित नेपाल पक्ष भएको अन्तर्राष्ट्रिय सन्धि वा सम्झौतामा भएको व्यवस्था बमोजिम नेपालले पठाउनुपर्ने प्रतिवेदन तयारी सम्बन्धमा नेपाल सरकारलाई सुझाव दिने<sup>36</sup>, महिला हिंसा वा सामाजिक कुरीतिबाट पीडित भएको वा महिला अधिकार प्रयोग गर्न नदिएको वा वंचित गरेको विषयमा कुनै पनि व्यक्ति वा संस्था विरुद्ध मुद्दा दायर गर्नुपर्ने आवश्यकता देखिएमा कानून बमोजिम अदालतमा मुद्दा दायर गर्न सम्बन्धित निकायसमक्ष सिफारिश गर्ने<sup>37</sup> जिम्मेवारी पनि आयोगलाई दिइएको हुँदा महिला हकहितको क्षेत्रमा राष्ट्रिय महिला आयोग सशक्त संस्थागत संरचना बन्न पुगेको छ।

---

32 ऐंऐ, धारा २५३ (१) (क) ।

33 ऐंऐ, धारा २५३ (१) (ख) ।

34 ऐंऐ, धारा २५३ (१) (ग) ।

35 ऐंऐ, धारा २५३ (१) (घ) ।

36 ऐंऐ, धारा २५३ (१) (ङ) ।

37 ऐंऐ, धारा २५३ (१) (च) ।

## महिला तथा बालअधिकार सम्बन्धी प्रमुख अन्तर्राष्ट्रिय कानूनहरू

महिला विरुद्ध हुने सबै प्रकारका भेदभाव उन्मूलन गर्ने महासन्धि: नेपालले महिला विरुद्ध हुने सबै प्रकारका भेदभाव उन्मूलन गर्ने महासन्धि, १९७९लाई सन् २२ अप्रिल १९९१मा अनुमोदन गरी कार्यान्वयनमा ल्याएको छ। यस महासन्धि महिलाको मानवअधिकार संरक्षण र संवर्धन गर्ने महत्त्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रिय लिखित हो। यस महासन्धिलाई महिलाको अन्तर्राष्ट्रिय अधिकारपत्र (International Bill of Rights for Women) पनि भनिन्छ। यस महासन्धिले महिला विरुद्ध हुने भेदभाव उन्मूलन गर्ने तथा महिला र पुरुष बीच सारभूत समानता कायम राख्ने मुख्य उद्देश्य राखेको छ।

यस महासन्धिको जम्मा ६ भाग तथा ३०वटा धारा रहेका छन्। धारा १देखि ५सम्म महासन्धिमा प्रयोग हुने साझा अवधारणाहरू जस्तै: अविभेदको सिद्धान्त, राज्यको उत्तरदायित्व, सारभूत समानताको सिद्धान्त र लैंगिक पूर्वाग्रही भूमिका परिवर्तनका सम्बन्धमा व्यवस्था गरिएको छ। महासन्धिको धारा ६देखि १६सम्म महिलाको विभिन्न अधिकारको व्यवस्था गरिएको छ। त्यसैगरी महासन्धिको धारा १७ देखि ३०सम्म महासन्धिको कार्यान्वयन सम्बन्धी कार्यविधिहरूको व्यवस्था गरिएको छ।

**यस महासन्धिअनुसार पक्षराष्ट्रका निम्न मुख्य-मुख्य दायित्वहरू रहन्छन्:**

१. सबै पक्षराष्ट्रहरूले उपयुक्त उपाय अपनाई र बिना ढिलाई महिला विरुद्ध हुने सबै किसिमका भेदभाव उन्मूलन गर्ने नीति अवलम्बन गर्नुपर्ने,
२. पुरुष र महिलाबीचको समानताको सिद्धान्तलाई आफ्नो राष्ट्रिय संविधान वा उपयुक्त कानूनमा समवेश गर्ने, महिला विरुद्धको भेदभाव निषेध गर्ने कानुनी र उपयुक्त उपायको व्यवस्था गर्नुपर्ने,
३. महिला विरुद्धको भेदभाव सिर्जना गर्ने प्रचलित कानून, नियम,

- परम्परा तथा व्यवहारहरू परिवर्तन वा उन्मूलन गर्न कानुनी व्यवस्थालगायतका सम्पूर्ण उपयुक्त उपायहरू अवलम्बन गर्नुपर्ने,
४. महिला विरुद्धको भेदभाव सिर्जना गर्ने सम्पूर्ण राष्ट्रिय दण्ड व्यवस्था खारेज गर्नुपर्ने,
  ५. महिलाको मानवअधिकार, विशेष संरक्षण अधिकार र मौलिक स्वतन्त्रताको प्रयोग तथा उपभोगको प्रत्याभूतिलगायत महिलाको विकास र समुन्नतिका लागि राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक र साँस्कृतिक क्षेत्रहरूमा कानुनी व्यवस्थालगायत सम्पूर्ण उपयुक्त उपायहरू अवलम्बन गर्नुपर्ने,
  ६. महिलाको सबै प्रकारको वेचबिखन तथा महिलाको वेश्यावृत्तिको शोषण दमन गर्न कानुनी व्यवस्था गर्नेलगायत उपयुक्त उपायहरू अवलम्बन गर्नुपर्ने,
  ७. महासन्धिको व्यवस्थाहरू कार्यान्वयन गर्न अपनाइएका कानुनी प्रावधान र उपायहरू सम्बन्धी विस्तृत प्रतिवेदन प्रत्येक ४/४ वर्षमा संयुक्त राष्ट्रसंघीय समितिमा पेश गर्नुपर्ने ।

जिउ मास्ने बेच्ने तथा अरुको वेश्यावृत्तिको शोषणको दमनका लागि व्यवस्था भएको महासन्धि: नेपालले जिउ मास्ने बेच्ने तथा अरुको वेश्यावृत्तिको शोषणको दमनका लागि व्यवस्था भएको महासन्धि, १९४९लाई २७ डिसेम्बर १९९५मा सम्मिलन गरी कार्यान्वयनमा ल्याएको छ ।

**यो महासन्धि विशेषतः निम्न विषयमा केन्द्रीत भएको पाइन्छ:**

१. वेश्यावृत्तिको रोकथाम गर्ने, वेश्यावृत्तिबाट र यो महासन्धिको कसुरबाट पीडित व्यक्तिहरूको पुनर्स्थापना तथा सामाजिक मिलनको लागि आफ्ना सार्वजनिक र नीजि शैक्षिक, स्वास्थ्य, सामाजिक, आर्थिक तथा अन्य सम्बन्धित सेवाहरूमार्फत उपायहरू अपनाउने वा त्यस्ता उपायहरूलाई प्रोत्साहित गर्ने,
२. अध्यागमन र बसाइँसराईका सम्बन्धमा यस महासन्धि अन्तर्गतका



१३ ● नारायणबहादुर कुँवर

आफ्ना दायित्वहरू अनुरूप वेश्यावृत्ति वा उद्देश्यका लागि दुवै लिंगका व्यक्तिहरूको बेच विखन नियन्त्रण गर्न आवश्यक उपायहरू अवलम्बन गर्ने,

३. विदेशी वेश्यावृत्तिहरूको पहिचान र नागरिक हैसियत स्थापित गर्न तथा कसका कारणले उनीहरूमा आफ्नो राष्ट्र छाड्नु परेको हो भन्ने कुरा पत्ता लगाउनका लागि त्यस्ता वेश्यावृत्तिहरूलाई घोषणा गर्न लगाउने र त्यस्तो जानकारी त्यस्ता व्यक्तिहरूको पछि हुने फिर्तिको उद्देश्यका लागि निजहरूको उत्पत्तिको राष्ट्रका निकायहरूलाई प्रेषण गर्ने,
४. वेश्यावृत्तिका लागि बेच विखन भएका र आश्रय बिहीन भएकाहरूलाई स्वदेश फिर्ता नभएसम्म हेरचाह र जीवनयापनको उपयुक्त व्यवस्था गर्ने ।

महिलाको राजनितिक अधिकार सम्बन्धी महासन्धि: नेपालले महिलाको राजनितिक अधिकार सम्बन्धी महासन्धि, १९५२लाई २६ अप्रिल १९६६मा सम्मिलन गरी कार्यान्वयनमा ल्याएको हो । यो महासन्धि मुख्य गरी महिलाको निर्वाचनमा मतदान गर्ने र उम्मेदवार हुन पाउने अधिकारको विषयमा केन्द्रीत भएको पाइन्छ । यो महासन्धिको पक्षराष्ट्रहरूले आफ्ना कानूनहरूमा निम्न दायित्वहरू पूरा गर्ने गरी कानूनमा व्यवस्था गर्नुपर्ने हुन्छ:

१. महिलालाई भेदभाव बिना पुरुषसरह सबै निर्वाचनमा मतदान गर्न पाउने अधार सुनिश्चित गर्नुपर्ने,
२. महिलालाई भेदभाव बिना पुरुषसरह राष्ट्रिय कानूनद्वारा स्थापित सार्वजनिक रूपले निर्वाचित हुने सबै निकायहरूको निर्वाचनका लागि योग्य हुने व्यवस्था गर्नुपर्ने,
३. महिलालाई भेदभाव बिना पुरुषसरह राष्ट्रिय कानूनद्वारा स्थापित सार्वजनिक पद धारण गर्न र सम्पूर्ण सार्वजनिक कामहरू गर्न पाउने व्यवस्था गर्नुपर्ने ।

नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू ● १४

महिला विरुद्ध हुने सबै प्रकारका भेदभाव उन्मूलन गर्ने सम्बन्धी महासन्धिको स्वेच्छिक प्रोटोकल: नेपालले महिला विरुद्ध हुने सबै प्रकारका भेदभाव उन्मूलन गर्ने सम्बन्धी महासन्धिको इच्छाधीन आलेख (प्रोटोकल), १९९९ लाई केही आरक्षणसहित १५ जुन २००७ मा अनुमोदन गरेको छ। यस इच्छाधीन आलेखले महिला विरुद्ध हुने सबै प्रकारका भेदभाव उन्मूलन गर्ने सम्बन्धी महासन्धिका अधिकारहरूलाई कार्यान्वयनका लागि निम्नानुसारका थप व्यवस्थाहरू गरेको छ:

१. महिला विरुद्ध हुने सबै प्रकारका भेदभाव उन्मूलन गर्ने सम्बन्धी महासन्धिका अधिकारहरू कुनै पक्षराष्ट्रबाट उल्लंघन भएर आफु पिडीत भएको दावीसहितको उजुरी महिला विरुद्धको भेदभाव उन्मूलन सम्बन्धी समितिमा पर्न आएमा वा समितिको जानकारीमा आएमा सोको छानबीनमा सहयोग पुऱ्याउनुपर्ने,
२. महासन्धिका व्यवस्थाहरू कार्यान्वयन गर्न अपनाइएका कानुनी प्रावधान र उपायहरू सम्बन्धी विस्तृत प्रतिवेदनमा प्रोटोकल कार्यान्वयनको प्रगति पनि समावेश गरि संयुक्त राष्ट्रसंघीय समितिमा पेश गर्नुपर्ने।

बालअधिकार सम्बन्धी महासन्धि: नेपालले बालअधिकार सम्बन्धी महासन्धि, १९८९लाई १४ सेप्टेम्बर १९९०मा अनुमोदन गरी कार्यान्वयनमा ल्याएको छ। यो महासन्धिले खास गरी बालबालिकाका निम्नानुसारका अधिकारहरूलाई पक्षराष्ट्रका राष्ट्रिय कानुनमा व्यवस्था गर्नुपर्ने दायित्व तोकेको छ:

१. सार्वजनिक वा निजी समाज कल्याणकारी संस्थाहरू, अदालतहरू, प्रशासनिक अधिकारीहरू वा विधायिकी निकायहरूबाट गरिने बालबालिका सम्बन्धित सबै कार्यहरूमा बालबालिकाको सर्वोत्तम हितलाई प्राथमिकता दिनुपर्ने,
२. पक्षराष्ट्रहरूले बालबालिकाका बाबु, आमा, कानुनी संरक्षक वा निजहरूको लागि कानुनी रूपमा जिम्मेवार अन्य व्यक्तिहरूको अधिकार र कर्तव्यहरूलाई ध्यानमा राख्दै बालबालिकाको हितका

## १५ ● नारायणबहादुर कुँवर

- लागि आवश्यक संरक्षण र स्याहारको व्यवस्था सुनिश्चित गर्न आवश्यक व्यवस्थापकीय र प्रशासनिक उपायहरू अवलम्बन गर्नुपर्ने,
३. पक्षराष्ट्रहरूले बालबालिकाको स्याहार वा संरक्षणका लागि जिम्मेवार संस्था, सेवा र सुविधाहरू सक्षमतापूर्वक भए नभएको यकिन गर्नुपर्ने,
४. राज्यपक्षले महासन्धिले मान्यता दिएको बालबालिकाहरूको प्रयोगको सिलसिलामा निजहरूको उदयोन्मुख व्यक्तिगत क्षमतासँग मेल खाने किसिमबाट उपयुक्त निर्देशन र मार्गदर्शन प्रदान गर्नुपर्ने, बाबु, आमा वा स्थानीय परम्पराले दिएअनुसार परिवार वा समुदायका वैधानिक अभिभावकहरू वा बालबालिकाको निम्ति कानुनी रूपमा जिम्मेवार अन्य व्यक्तिहरूको उत्तरदायित्व, अधिकार र कर्तव्यलाई मान्यता दिनुपर्ने, बालबालिकाको दीर्घजीवन र विकासका लागि यथासम्भव प्रयास गर्नुपर्ने,
५. बालबालिकाको सर्वोत्तम हितका लागि निजलाई बाबु, आमाबाट अलग राख्नु आवश्यक छ भन्ने कुरा सम्बन्धित कानून र कार्यविधि अनुरूप सक्षम अधिकारीले, न्यायिक पुनरावलोकनको अधीनमा रही, निर्णय गरेमा बाहेक कुनै बालबालिकालाई बाबु, आमाको इच्छा विपरित अलग गर्न नपाइने,
६. बालबालिकालाई आफूसँग सम्बद्ध विषयमा स्वतन्त्र रूपले आफ्नो विचार व्यक्त गर्न पाउने व्यवस्था गर्नुपर्ने, सार्वजनिक प्रचारमाध्यमलाई बालबालिकाको व्यक्तित्व विकास र बालबालिकाको सामाजिक र साँस्कृतिक हित हुने खालको सूचना र सामाग्री प्रचारप्रसार गर्न प्रोत्साहन गर्ने, साँस्कृतिक, राष्ट्रिय तथा अन्तर्राष्ट्रिय विविध स्रोतहरूबाट प्राप्त हुने जानकारी र सामाग्रीको उत्पादन, आदानप्रदान र वितरणमा अन्तर्राष्ट्रिय सहयोगलाई प्रोत्साहन दिने,
७. सार्वजनिक प्रचारप्रसार संस्थाहरूले अल्पसंख्यक समुदाय वा आदिवासी बालबालिकाको भाषिक आवश्यकतालाई ध्यान दिने, बालबालिकाको हितलाई आघात् पुऱ्याउने खालको जानकारी तथा सामाग्रीबाट तिनको संरक्षण गर्नका लागि सही मार्गदर्शन गर्दै विकासलाई प्रोत्साहन दिने,

८. प्रत्येक ५/५ वर्षमा संयुक्त राष्ट्रसंघीय बालअधिकार समितिमा आवधिक प्रतिवेदन पेश गर्ने ।

सशस्त्र द्वन्द्वमा बालबालिकाको संलग्नता सम्बन्धमा व्यवस्था भएको बालअधिकार सम्बन्धी स्वेच्छीक प्रोटोकल: नेपालले सशस्त्र द्वन्द्वमा बालबालिकाको संलग्नता सम्बन्धमा व्यवस्था भएको बालअधिकार सम्बन्धी स्वेच्छीक प्रोटोकल, २०००लाई ३१ अक्टोबर २००५ मा अनुमोदन गरेको छ । यस इच्छाधिन आलेखले सशस्त्र द्वन्द्वमा बालबालिकाको संलग्नतालाई निषेध गर्न पक्षराष्ट्रहरूलाई दबाव दिने जस्ता कानुनी व्यवस्था गरी कार्यान्वयनका लागि जोड दिने गरेको छ । पक्षराष्ट्रका निम्न दायित्व यस प्रोटोकल अन्तर्गत तोकिएको पाइन्छ:

१. प्राविधिक तथा वित्तीय सहयोगको माध्यमबाट प्रोटोकल विपरीतका कुनै पनि क्रियाकलापको रोकथाम तथा यस प्रोटोकल विपरीतका कार्यहरूबाट पिडीत व्यक्तिहरूको पुनर्स्थापना तथा सामाजिक पुनर्एकिकरणलागतका कार्यहरू संचालन गर्नु,
२. प्रोटोकलका व्यवस्थाहरू कार्यान्वयन गर्न अपनाइएका उपायहरू सम्बन्धी विस्तृत प्रतिवेदन प्रत्येक ५/५वर्षमा बालअधिकार समितिमा पेश गर्नु ।

बालबालिकाको बेच बिखन, बाल वेश्यावृत्ति तथा बाल अशिलल चित्र सम्बन्धमा व्यवस्था भएको बालअधिकार सम्बन्धी स्वेच्छीक प्रोटोकल: नेपालले बालबालिका बेच बिखन, बाल वेश्यावृत्ति तथा बाल अशिलल चित्र सम्बन्धमा व्यवस्था भएको बालअधिकार सम्बन्धी स्वेच्छीक प्रोटोकल, २०००लाई २० जनवरी २००६मा अनुमोदन गरेको छ । यस स्वेच्छिक प्रोटोकलले बालबालिकाको बेच बिखन, बालवेश्यावृत्ति तथा बाल अशिलल चित्र उत्पादन, प्रचारप्रसार सम्बन्धमा निषेध गर्न पक्षराष्ट्रहरूलाई कानुनी व्यवस्था गर्न दबाव दिने गरेको पाइन्छ । साथै प्रोटोकलले उल्लेख गरेका बालबालिका सम्बन्धी कसुरहरूमा रोक लगाउन कानुनी, प्रशासनिक उपाय, सामाजिक नीति र कार्यक्रमहरू

बनाउने वा सुदृढ गर्ने, कार्यान्वयन र प्रचारप्रसार गर्ने, जोखिममा रहेका बालबालिकाको संरक्षण गर्ने, प्रोटोकलले उल्लेख गरेका कसुरहरूको विज्ञापन हुने सामाग्रीको उत्पादन र प्रचारप्रसारलाई प्रभावकारी ढंगले रोक लगाउने विषयमा जोड दिन्छ ।

वेश्यावृत्तिको लागि महिला र बालबालिका बेच बिखन विरुद्धको सार्क महासन्धि: वेश्यावृत्तिको लागि महिला र बालबालिका बेच बिखन रोक्ने उद्देश्यले ५ जनवरी २००२मा हस्ताक्षरित सार्क क्षेत्रीय स्तरको “वेश्यावृत्तिको लागि महिला र बालबालिकाको बेच बिखन विरुद्धको सार्क महासन्धि, २००२” लागू भएपछि, क्षेत्रीयस्तरमा मानव बेच बिखन नियन्त्रण गर्न, यस सम्बन्धी अनुसन्धान, तहकिकात, अभियोजन तथा सजाय सम्बन्धी कानुनी व्यवस्था गर्न, प्रभावितहरूको उद्धार, संरक्षण र पुनर्स्थापना गर्न र मानव र बालबालिकाको बेच बिखनको रोकथाम र दबाउने कार्यलाई प्रभावकारी बनाउन कानुनी व्यवस्था गर्न अझ प्रभावकारी हुने आशा गर्न सकिन्छ ।

दक्षिण एशियामा बाल कल्याण प्रवर्धनको निमित्त क्षेत्रीय समन्वय सम्बन्धी सार्क महासन्धि: दक्षिण एशियामा बाल कल्याण प्रवर्धनको निमित्त क्षेत्रीय समन्वय बढाउने उद्देश्यले ५ जनवरी २००२मा हस्ताक्षरित सार्क क्षेत्रीय स्तरको “दक्षिण एशियामा बाल कल्याण प्रवर्धनको निमित्त क्षेत्रीय समन्वय सम्बन्धी सार्क महासन्धि, २००२” लागू भएपछि, क्षेत्रीय स्तरमा बालअधिकार तथा कल्याण सहज बनाउने, परिपूर्ति गर्ने तथा प्रवर्धन गर्ने सम्बन्धी क्षेत्रीय र राष्ट्रिय प्रयत्नहरूमा सकरात्मक प्रभाव पर्नसक्ने देखिन्छ । साथै महासन्धिको कार्यान्वयनका लागि कानुनी, व्यवस्थापकीय र अन्य उपायहरू अवलम्बन गर्दै पक्षराष्ट्रहरूले समुदायमा आधारित संगठनलगायतका गैरसरकारी संस्थाहरूको सहभागिता प्रोत्साहित गर्न र समर्थन गर्न पनि सहज हुने देखिन्छ ।

अपांगको अधिकार सम्बन्धी महासन्धि: नेपालले अपांगको अधिकार

नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू ● १८

सम्बन्धी महासन्धि, २००६लाई २०१०मे ७ मा अनुमोदन गरी कार्यान्वयनमा ल्याएको छ। यो महासन्धि मुख्य गरी अपांगको अधिकार सम्बन्धमा केन्द्रीत हुँदै पक्षराष्ट्रलाई आफ्ना कानूनहरूमा निम्न दायित्वहरू पुरा गर्न दबाव दिने गर्दछ:

१. बिना भेदभाव अपांगहरूको मानवअधिकार र मौलिक स्वतन्त्रताको प्रत्याभूति र प्रवर्धन गर्न कानुनी, प्रशासनिक र अन्य उपयुक्त उपायहरू अवलम्बन र कार्यान्वयन गर्नुपर्ने,
२. अपांगहरूलाई भेदभाव हुने किसिमका कानून, नियम, परम्परा र व्यवहारहरू संशोधन वा खारेज गर्नुपर्ने,
३. अपांगहरूलाई संरक्षण, बचाउ र तिनीहरूको मानवअधिकार प्रवर्धन गर्ने गरि नीति, कार्यक्रमहरू संचालन गर्नुका साथै उपयुक्त उपायहरू अवलम्बन गर्नुपर्ने ।

अपांगको अधिकार सम्बन्धी महासन्धिको स्वेच्छिक प्रोटोकल: नेपालले अपांगको अधिकार सम्बन्धी महासन्धिको स्वेच्छिक प्रोटोकल, २००६लाई पनि ७ मे २०१०मा अनुमोदन गरी कार्यान्वयनमा ल्याएको छ । यो प्रोटोकलअनुसार पक्षराष्ट्रहरूले अपांगको अधिकार सम्बन्धमा आफ्ना कानूनहरूमा निम्न दायित्व पुरा गर्नुपर्ने हुन्छ:

१. राज्यका नीति, नियम र कानूनहरूमा अपांगहरूको मानवअधिकारको सुनिश्चितता गर्ने,
२. अपांग महिला र अपांग बालबालिकालाई विशेष संरक्षणको व्यवस्था गर्नु,
३. व्यक्ति, संगठन वा व्यापारका काम कारवाहीबाट अपांगहरूलाई भेदभाव हुने किसिमका क्रियाकलापहरू रोक्नु, अपांगहरूलाई सहयोग पुराने किसिमका प्रविधि, वस्तु र सेवा सुविधाको विकास र आविष्कारमा सहयोग पुऱ्याउनु, अपांगहरूलाई चाहिने सहयोग बारे सार्वजनिक सूचना सम्प्रेषण गर्ने ।

### महिला तथा बालअधिकार सम्बन्धी भएका प्रमुख प्रयासहरू

नेपालमा महिला विकास, लैंगिक समानता र लैंगिक मूलप्रवाहीकरणका लागि विभिन्न ऐन, नियम, नीति, रणनीति र कार्ययोजना कार्यान्वयनमा आएका छन् । जसमध्ये निम्नानुसारका प्रयासहरूलाई मुख्य रूपमा उल्लेख गर्न सकिन्छः

१. मानव बेच बिखन तथा ओसारपसार गर्ने कार्यलाई नियन्त्रण गर्न र त्यस्तो कार्यबाट पीडित व्यक्तिको संरक्षण र पुनर्स्थापना गर्न कानुनी व्यवस्था गर्न नेपाल सरकारले मानव बेच बिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ र नियमावली, २०६५ कार्यान्वयनमा ल्याएको छ ।
२. बोक्सीको आरोप लगाई कसैलाई गाली बेइजती गर्ने, अपमान गर्ने, कुटापिट गर्ने, अंगभंग गर्ने जस्ता कार्यलाई कसुर मानी सजायको व्यवस्था गर्न बोक्सीको आरोप (कसुर र सजाय) ऐन, २०७२ कार्यान्वयनमा छ ।
३. नेपाल सरकारले कार्यस्थलमा हुने यौनजन्य दुर्व्यवहारलाई परिभाषित गर्दै सम्मानजनक कार्यवातावरण निर्माण गर्न र दुर्व्यवहार रोक्न कानुनी व्यवस्था अपरिहार्य ठानी कार्यस्थलमा हुने यौनजन्य दुर्व्यवहार (निवारण) ऐन, २०७१ कार्यान्वयनमा ल्याएको छ ।
४. घरेलु हिंसाको व्याख्या गर्दै त्यस्तो कार्यलाई कसुर मानी पीडितलाई तत्काल सुरक्षा प्रदान गर्न सेवा केन्द्रको स्थापना गर्न र उपचार र पुर्स्थापनाको व्यवस्था गर्न घरेलु हिंसा (कसुर र सजाय) ऐन, २०६६ र घरेलु हिंसा (कसुर र सजाय) नियमावली, २०६७ लागू भएको छ ।
५. ज्येष्ठनागरिकको संरक्षण र सामाजिक सुरक्षा प्रदान गर्न, निजहरूमा रहेको ज्ञान, शीप, क्षमता र अनुभवको सदुपयोग गरी निजहरूमा सम्मान र सद्भाव अभिवृद्धि गर्न ज्येष्ठनागरिक सम्बन्धी ऐन, २०६३ ज्येष्ठनागरिक सम्बन्धी नियमावली, २०६५ कार्यान्वयनमा छ ।
६. आर्थिक दृष्टिले कमजोर तथा विपन्न वर्गका एकलमहिलाको हित र संरक्षण गर्न एकलमहिला सुरक्षा कोष (संचालन) नियमावली, २०७० लागू भएको छ । लैंगिक आधारमा हुने हिंसाका पीडितहरूलाई

तत्काल उद्धार गर्न, औषधी उपचार गर्न, आर्थिक सहयोग उपलब्ध गराउन लगायतका पुनर्स्थापनाका कार्यका लागि लैंगिक हिंसा निवारण कोष (संचालन) नियमावली, २०६७ कार्यान्वयनमा ल्याएको छ । त्यस्तै आपत्कालीन अवस्थामा रहेका बालबालिकाको उद्धार गरी राहत दिन, पुनर्स्थापना गर्न र बालबालिकाको हित प्रवर्धन गर्न आपत्कालीन बाल उद्धार कोष (संचालन) नियमावली, २०६७ कार्यान्वयनमा छ ।

७. अपांगहरूको हित संरक्षण तथा सम्बर्द्धन गर्न, अपांगहरूको स्वास्थ्य, शिक्षा, स्याहार, तालिम र उनीहरूको समानताको हकको रक्षा र रोजगारीसमेतको व्यवस्थाका लागि अपांग संरक्षण तथा कल्याण ऐन, २०३९ र अपांग संरक्षण तथा कल्याण नियमावली, २०५१ लागू गरिएको छ ।
८. राज्यले बालबालिकाको हक र हितको संरक्षण गरी तिनीहरूको शारीरिक, मानसिक र बौद्धिक विकास गर्न समयानुकूल कानुनी व्यवस्था गर्न आवश्यक ठानेकाले बालबालिका सम्बन्धी ऐन, २०४८, बालबालिका सम्बन्धी नियमावली, २०५१ र बालन्याय (कार्यविधि) नियमावली, २०६३ कार्यान्वयनमा ल्याएको छ । बालबालिकालाई कलकारखाना, खानी वा यस्तै जोखिमपूर्ण काममा लगाउन निषेध गर्ने तथा बालबालिकालाई अन्य काममा लगाउँदा उनीहरूको स्वास्थ्य, सुरक्षा तथा सेवा र सुविधाका सम्बन्धमा आवश्यक व्यवस्था गर्न बालश्रम (निषेध र नियमित गर्ने) ऐन, २०५६ ल्याइएको पाइन्छ ।
९. उपरोक्तानुसारका ऐन र नियम बाहेक नेपाल सरकारले महिला, बालबालिका, अपांग र ज्येष्ठनागरिकको सुरक्षा, संरक्षण र विकासका लागि महिला विरुद्ध हुने सबै प्रकारका भेदभाव उन्मुलन गर्ने महासन्धि कार्यान्वयनका लागि तयार गरिएको राष्ट्रिय कार्ययोजना, २०६० कार्यान्वयनमा ल्याएको छ । यस वर्ष यो कार्ययोजनाको पुनरावलोकन गर्ने कार्यक्रम रहेको छ । सन् १९९५ मा बेजिङमा भएको अन्तर्राष्ट्रिय महिला सम्मेलनले निर्दिष्ट गरेका १२वटा



२१ ● नारायणबहादुर कुँवर

विषयमध्ये लैंगिक समानता र महिला सशक्तीकरणका विषयलाई कार्यान्वयनमा ल्याउन लैंगिक समानता र महिला सशक्तीकरण राष्ट्रिय कार्ययोजना, २०६१ कार्यान्वयनमा छ । यो कार्ययोजना पनि यस वर्ष पुनरावलोकन गर्ने क्रममा रहेको छ । त्यस्तै महिला, बालबालिका तथा समाज कल्याण मन्त्रालयले ज्येष्ठनागरिक राष्ट्रिय कार्ययोजना, २०६२, लैंगिक हिंसा अन्त्य तथा लैंगिक सशक्तीकरण सम्बन्धी राष्ट्रिय रणनीति तथा कार्ययोजना, २०६९, मानव बेच बिखन तथा ओसारपसार नियन्त्रणका लागि मानव बेच बिखन तथा ओसारपसार विरुद्धको राष्ट्रिय कार्ययोजना, २०६६ अपांगता सम्बन्धमा अपांगता सम्बन्धी १०वर्षे राष्ट्रिय नीति तथा कार्ययोजना, बालविवाहलाई निरुत्साहित गर्न बालविवाह अन्त्यकालागि राष्ट्रिय रणनीति, २०७२ लागू गरेको छ ।

१०. यी बाहेक महिला, बालबालिका, अपांग र ज्येष्ठनागरिकका क्षेत्रमा कार्य गर्न सहज होस् भन्ने अभिप्रायले महिला, बालबालिका तथा समाज कल्याण मन्त्रालयले निम्नानुसारका निर्देशिका, मापदण्ड एवं कार्यविधिहरू निर्माण गरी कार्य गरिरहेको छ:

- क) आवासीय बालगृह संचालन तथा व्यवस्थापन सम्बन्धी मापदण्ड, २०६९ ।
- ख) ज्येष्ठनागरिक स्वास्थ्योपचार सेवा कार्यक्रम कार्यान्वयन निर्देशिका, २०६१ ।
- ग) छाउपडी प्रथा उन्मुलन निर्देशिका, २०६४ ।
- घ) श्रमजीवि महिलाहरूप्रति डान्स रेष्टुरेण्ट, डान्स बार जस्ता कार्यस्थलमा हुने यौन उत्पिडन नियन्त्रण गर्न जारी गरिएको निर्देशिका, २०६५ ।
- ङ) पुनर्स्थापना केन्द्र संचालन निर्देशिका, २०६८ ।
- च) पुनर्स्थापना कोष संचालन निर्देशिका, २०६८ ।
- छ) अपांगता भएका व्यक्तिलाई हवाई यात्रामा दिइने छुट्ट वा सहूलियत सम्बन्धी कार्यविधि, २०६३ ।
- ज) बाल हेल्पलाइन संचालन कार्यविधि, २०६४ ।

- भ) सी.बी.आर.(CBR) कार्यक्रम संचालन निर्देशिका र सी.बी.आर.कार्यक्रम संचालन सम्बन्धी खर्च विधि, २०७२ ।
- त्र) सी.बी.आर. (CBR) कार्यक्रम कार्यान्वयन गर्नका लागि संस्था छनोट सम्बन्धी मापदण्ड, २०७१ ।
- ट) अपांगता भएका व्यक्तिहरूको परिचयपत्र वितरण निर्देशिका, २०६५ ।
- ठ) अपांगता भएका व्यक्तिहरूका लागि पहुँचयुक्त भौतिक संरचना तथा सञ्चार सेवा निर्देशिका, २०६९ ।
- ड) सार्वजनिक एवं सेवाप्रदायक संस्थाबीचको साभेदारीमा अपांगता भएका व्यक्तिहरूको आवासीय पुनर्स्थापना सेवा संचालन विधि, २०७२ ।
- ढ) मानव बेच बिखन विरुद्धको स्थानीय समिति (गठन तथा परिचालन) निर्देशिका, २०७० ।
- ण) एकलमहिला सुरक्षा कोष संचालन मापदण्ड, २०७१ ।

### महिलाअधिकार सम्बन्धमा अन्य प्रमुख प्रयासहरू

महिला हक र अधिकार रक्षा र विभेदको अन्त्यका लागि वि.सं. १९७७मा सतिप्रथाको अन्त्य गरियो । वि.सं. २०२०को मुलुकी ऐन संशोधनले महिला समानताको विषयमा महत्वपूर्ण व्यवस्था गरेको पाइन्छ । विकासमा महिलाहरूको सहभागिता अभिवृद्धि गर्ने उद्देश्यले वि.सं. २०३७ सालमा स्थानीय विकास मन्त्रालयअन्तर्गत महिला विकास शाखा स्थापना गरियो भने वि.सं. २०५२मा महिला तथा समाज कल्याण मन्त्रालय स्थापना गरियो । यसै गरि वि.सं. २०५७मा पहिलो पटक राष्ट्रिय महिला आयोग गठन भयो । महिला विकासको क्षेत्रमा आवश्यक स्रोतको कमी नहोस् भनि वि.सं. २०६४/०६५ ( २००७/०८) देखि नेपालको बजेट प्रणालीमा Gender Responsive Budgeting को थालनी गरिएको छ ।

### आवधिक योजनामा महिला विकासका प्रयासहरू

१. छैठौँ योजना (२०३७-२०४२)मा सर्वप्रथम महिला विकास सम्बन्धी कार्यक्रमहरूले प्राथमिकता पाएको देखिन्छ । यस योजनामा शिक्षा, स्वास्थ्य र परिवार नियोजनका कार्यक्रमहरूमा महिला सहभागिता बढाई महिलाहरूको क्षमता अभिवृद्धि गर्ने नीति अवलम्बन गरिएको थियो ।
२. सातौँ योजना (२०४२-२०४७)मा महिलाहरूको उत्पादक क्षमता बढाउन तथा विकास प्रक्रियामा पुरुषसह सहभागिता बढाउने नीति अवलम्बन गरिएको पाइन्छ ।
३. आठौँ योजना (२०४९-२०५४)मा महिलाहरूलाई विकासको मूलप्रवाहमा समावेश गर्ने र उनीहरूको सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक उन्नयन गर्ने नीति अंगिकार गरिएको पाइन्छ ।
४. नवौँ योजना (२०५४-२०५९)मा महिला र पुरुषबीचको लैंगिक विभेद हटाउन महिला सशक्तीकरणको माध्यमबाट महिलाहरूलाई विकासको मूलप्रवाहमा ल्याउने नीति लिइएको पाइन्छ ।
५. दशौँ योजना (२०५९-२०६४)मा महिला विकास र सशक्तीकरणका लागि लैंगिक मूलप्रवाहीकरण, लैंगिक समानता र महिला सशक्तीकरणका साथै आर्थिक वृद्धि र गरिबी निवारणका लक्ष्य प्राप्त गर्न महिला विरुद्ध हुने सबै प्रकारका विभेदको अन्त्य गर्दै महिला अधिकारको आधारमा समता र समानतामूलक समाज निर्माण गर्ने उद्देश्य लिइयो । यसै योजना अवधिमा व्यवस्थापिका संसदबाट सम्पूर्ण राज्यसंयन्त्रमा महिलाको ३३प्रतिशत प्रतिनिधित्व हुनुपर्ने प्रस्ताव पारितसमेत भएको पाइन्छ ।
६. अन्तरिम योजना (२०६४-२०६७)मा समावेशी विकासको नीतिले प्रमुखता पाई लैंगिक मूलप्रवाहीकरण र समावेशीकरणमा महिला सशक्तीकरण तथा लैंगिक समानताबाट महिलाहरूको मूलभूत स्वतन्त्रता र अधिकार सुनिश्चित गर्दै समुन्नत, न्यायपूर्ण र लैंगिक रूपले समावेशी र समतामूलक नयाँ नेपाल निर्माण गर्ने दीर्घकालीन सौँच राखियो ।

७. दोस्रो अन्तरिम योजना (२०६७-२०७०)मा सबै वर्ग क्षेत्रका महिलाहरूको सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक सशक्तीकरण गर्दै दीगो शान्ति एवं विकासमा महिलाहरूको भूमिकालाई सशक्त बनाउने, महिला विरुद्धका विभिन्न प्रकारका लैंगिकतामा आधारित हिंसा एवं विभेदको अन्त्य गर्ने उद्देश्य लिइयो ।
८. तेस्रो अन्तरिम योजना (२०७०-२०७३)मा विकासमा महिलाहरूको भूमिकालाई महत्व दिने, लैंगिकतामा आधारित कुप्रथा, कुरीतिहरूलाई निरुत्साहित गर्ने र महिलाहरूको नेतृत्व क्षमता वृद्धि गर्न कार्यक्रमहरू संचालन गर्ने नीति लिइएको पाइन्छ । साथै द्वन्द्व पीडित, एकलमहिलाका लागि कार्यक्रमहरू संचालन गरी जीविकोपार्जनको व्यवस्था गर्ने जस्ता नीति अख्तियार गरेको पाइन्छ ।
९. चौथौं योजना (२०७३/०७४-२०७५/७६)मा लैंगिक समानतामार्फत मर्यादित, न्यायपूर्ण, सुरक्षित र सभ्य समाजको परिकल्पना गर्दै सामाजिक र आर्थिक अवसरहरूमा समानसहभागिता सुनिश्चित गरी लैंगिक मूलप्रवाहीकरण र सशक्तीकरण गर्ने लक्ष्य लिएको पाइन्छ । उक्त लक्ष्य प्राप्त गर्न सबै वर्ग र क्षेत्रका महिलाको सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक सशक्तीकरण गर्दै महिलाका मुलभूत अधिकार सुनिश्चित गर्ने, लैंगिकतामा आधारित हिंसा, भेदभाव र बहिष्करणलाई अन्त्य गर्ने र राजनीतिक, आर्थिक र सार्वजनिककलागत सम्पूर्ण निर्णायक तहमा महिलाहरूको सार्थक र समान पहुँचका लागि समान अवसरहरूको सिर्जना गर्ने उद्देश्य राखेको पाइन्छ । यसै गरी योजनामा लोपोन्मुख, अतिसिमान्तकृत र सिमान्तकृत आदिवासी जनजातिको आर्थिक, सामाजिक तथा साँस्कृतिक सुधारबाट समतामूलक तथा न्यायपूर्ण समाजको सिर्जना गर्ने सौँच राख्दै लोपोन्मुख, अतिसिमान्तकृत र सिमान्तकृत आदिवासी जनजातिको क्षमता विकास र स्रोतसाधनहरूमा पहुँच वृद्धि र विस्तार गर्ने उद्देश्य राखेको पाइन्छ । चौथौं योजनाको बालबालिका तथा किशोरकिशोरी सम्बन्धी नीतिमा बालबालिका

विरुद्ध हुने सबै प्रकारका शारीरिक तथा मानसिक हिंसा, क्षति वा दुर्व्यवहारबाट बालबालिका तथा किशोरकिशोरीलाई संरक्षण गर्ने लक्ष्य लिएको पाइन्छ । उक्त लक्ष्य प्राप्त गर्न बालबालिका तथा किशोरकिशोरीको सम्पूर्ण अधिकारको संरक्षण र प्रवर्धन गर्ने र बालबालिका तथा किशोरकिशोरीउपर हुने सबै प्रकारको भेदभाव, शोषण, हिंसा, उपेक्षा र दुर्व्यवहारको अन्त्य गर्ने उद्देश्य राखेको पाइन्छ । यसै योजनामा मानवबेच विखन र ओसारपसार नियन्त्रणका लागि मानवबेच विखनको जोखिममा पर्न सक्ने समूह/समुदायको पहिचान गरी बेच विखन तथा ओसारपसार कार्यलाई न्यूनीकरण तथा नियन्त्रण गर्न विद्यमान संयन्त्र र संरचनाहरूमा सुदृढीकरण तथा क्षमता अभिवृद्धि गर्ने लक्ष्य राखिएको पाइन्छ ।

निजामति सेवा ऐन, २०४९को दोस्रो संशोधनले निजामति सेवालाई समावेशी बनाउन खुला प्रतियोगिताबाट पूर्ति हुने पदमध्ये ४५प्रतिशत पद छुट्टयाई सो प्रतिशतलाई सयप्रतिशत मानी महिलालाई ३३प्रतिशत, आदिवासी जनजातिलाई २७प्रतिशत र मधेशीलाई २२प्रतिशत आरक्षण दिइएको छ । त्यस्तै दलित, अपांग र पिछडीएको क्षेत्रका उम्मेदवारलाई क्रमशः ९, ५ र ४प्रतिशत पद छुट्टयाएको छ । यस्तै प्रकारले राज्यका सूरक्षा निकायका खुलातर्फको पदपूर्तिमा पनि महिला, आदिवासी जनजाति, मधेशी, दलित र पिछडीएको क्षेत्रका उम्मेदवारहरूलाई आरक्षण दिइएको पाइन्छ ।

### अबको बाटो

विविध सामाजिक समूहहरूको चाहना र अपेक्षालाई सम्बोधन गर्न नीति, कानून र योजना निर्माण गर्नु आफैमा कठीन कार्य हो भन्ने यसको कार्यान्वयन भन्ने कठीन हुने गर्दछ । विभिन्न सामाजिक समूहभित्र रहने महिलाहरूको जीवनस्तरलाई उठाई राष्ट्रिय विकासको मूलप्रवाहमा ल्याउन अझै ठोस योजना र कार्यक्रमहरूको आवश्यकता रहेको छ ।

उपलब्ध स्रोतसाधनको उच्चतम प्रयोग गरी पिछडिएका लक्षित वर्गमा सामानुपातिक रूपमा विकासको प्रतिफल पुऱ्याउन सकिए समावेशी राज्य निर्माणमा सघाउ पुग्न जान्छ । मानव विकास सूचकांक, २०१०ले पहिलो पटक कायम गरेको लैंगिक असमानता सूचकमा (२०१६) नेपाल १०८औं स्थानमा रहेको उल्लेख छ । जुन न्यूनतम वर्गका देश अन्तर्गत पर्दछ । समग्र रूपमा नेपालको लैंगिक विकास सूचकसमेत न्यून रहेको अवस्थामा लैंगिक असमानता सूचकसमेत न्यून हुनुले महिला-महिला बीचसमेत सम्पन्नता, विपन्नता, जातजाति, समुदाय, धर्म, वर्ग तथा भौगोलिक क्षेत्रका आधारमा ठूलो भिन्नता रहेको पाइन्छ ।

यसै गरी विकासका विभिन्न क्षेत्रमा सहभागिता, निर्णय प्रक्रियालगायत आधारभूत सेवाको पहुँचमासमेत पुरुषको तुलनामा महिलाहरू निकै पछाडि परेका छन् । अतः लैंगिक समानता र महिला विकासका लागि सरकारी, गैरसरकारी र निजी क्षेत्रबाट निम्न बमोजिमका नीति, योजना र कार्यक्रमहरू निर्माण र कार्यान्वयन हुनुपर्ने देखिन्छ:

१. महिला सहभागिता र सशक्तीकरणका लागि उपलब्ध नीति, ऐन र कानूनको प्रभावकारी कार्यान्वयन संयन्त्र र प्रक्रियाहरूको व्यवस्था गर्दै राज्यका सबै जनताका लागि आधारभूत मानवअधिकार र स्वतन्त्रताको सुरक्षको प्रत्यभूति गर्न उपयुक्त र छरितो उपायहरू अवलम्बन गर्नुपर्ने ।
२. उपयुक्त संघीय स्वरूपको उच्चतम अभ्यास गर्दै जनताको सर्वोपरि हितमा कार्य गर्न संघीय, प्रान्तीय र स्थानीय तहलाई उत्तरदायी बनाउनुपर्ने ।
३. जातीय, धार्मिक, भाषिक, वर्गीय, भौगोलिक र लैंगिक समूहहरूको चासोका विषयहरूमा संघीय तहमा नीति, कानून र नियम निर्माण हुँदा सबैको प्रतिनिधित्व होस् भन्नेमा सुनिश्चित हुने ।
४. आदिवासी जनजाति, मधेशी, मुस्लिम, दलित, अपांग र महिला वर्गका समुदायहरूलाई अधिकारको चेतना अभिवृद्धि हुने गरी

२७ ● नारायणबहादुर कुँवर

कार्यक्रमहरू ल्याउने ।

५. राज्यले सामाजिक सुरक्षका कार्यक्रमहरूलाई विस्तार गर्दै प्रभावकारी कार्यान्वयनको व्यवस्था मिलाउने ।
६. विकास प्रक्रियामा सबै वर्ग, जाति, लिंगको उपयुक्त सहभागिता सुनिश्चित गर्दै लाभ र अवसरको उपयोगमा पनि न्यायोचित वितरणको पारदर्शी प्रक्रिया अवलम्बन गर्ने ।
७. सार्वजनिक प्रचारप्रसार संस्थाहरूलाई अल्पसंख्यक समुदाय वा आदिवासी बालबालिकाको भाषिक आवश्यकतालाई ध्यान दिने, बालबालिकाको हितलाई आघात पुऱ्याउने खालको जानकारी तथा सामाग्रीबाट तिनको संरक्षण गर्नका लागि सही मार्गदर्शन गर्दै विकासलाई प्रोत्साहन दिने ।
८. मानव बेच बिखन र ओसारपसार नियन्त्रणका लागि मानव बेच बिखनको जोखिममा पर्न सक्ने समूह/समुदायको पहिचान गरी बेच बिखन तथा ओसारपसार कार्यलाई न्यूनीकरण तथा नियन्त्रण गर्न जनचेतनामूलक कार्यक्रमहरू संचालन गर्ने ।
९. बालबालिका तथा किशोरकिशोरी विरुद्ध हुने सबै प्रकारका शारीरिक तथा मानसिक हिंसा, क्षति वा दुर्व्यवहारबाट बालबालिका तथा किशोरकिशोरीलाई संरक्षण गर्न छरितो संयन्त्र र संरचनाहरूको निर्माणमा जोड दिने ।
१०. लोपोन्मुख, अतिसिमान्तकृत र सिमान्तकृत आदिवासी जनजातिको आर्थिक, सामाजिक तथा साँस्कृतिक सुधारका लागि लक्षित कार्यक्रमहरू ल्याउने ।

समावेशी शासन व्यवस्था नै द्रुततर र गुणात्मक विकास प्राप्त गर्ने महत्वपूर्ण आधार भएकोले यस विषयले अन्तर्राष्ट्रिय मान्यता पनि पाएको छ । विभिन्न सामाजिक समुदायलगायत महिलाहरूको समावेशीकरण, प्रतिनिधित्व, सहभागिता र सशक्तीकरण बिना सम्पूर्णतामा समृद्ध राष्ट्र निर्माण हुन सक्दैन । राज्यसंयन्त्रको सबै संरचना, क्षेत्र र प्रक्रियामा

नेपालमा आदिवासी अधिकार : नीतिगत अवस्था, चुनौती र अवसरहरू ● २८

उपेक्षित समुदाय, भौगोलिक क्षेत्र र लिंगको समावेशीकरण, प्रतिनिधित्व, सहभागिता गराई विकास निर्माणका कार्यहरूमा हातेमालो गर्न सकेमा समृद्ध, शान्त र न्यायपूर्ण नेपाल बनाउन सकिन्छ ।

### सन्दर्भ सामग्री

नेपालको संविधान, २०७२ ।

राष्ट्रिय योजना आयोगबाट प्रकाशित विभिन्न आवधिक योजना तथा चौधौं आवधिक योजना ।

नेपाल सरकार (२०६४) मानवअधिकार सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रिय महासन्धिहरूको संगालो, काठमाडौं: नेपाल सरकार कानून, न्याय तथा संसदीय व्यवस्था मन्त्रालय ।

सार्वजनिक प्रशासन, सारथी प्रकाशन ।

लोक सेवा आयोगबाट प्रकाशन हुने निजामति सेवा पत्रिकाका विभिन्न अंक ।

सामान्य प्रशासन मन्त्रालयबाट प्रकाशन हुने प्रशासन पत्रिकाका विभिन्न अंक ।